प्याज

प्याज एक नगदी फसल है जो सर्दियों में उगाई जाती है इसमें विटामिन सी, फास्फोरस आदि पोषक तत्व पाये जाते हैं, प्याज का उपयोग सलाद सब्जी, मसालें के रूप में किया जाता है। गर्मी में लू लग जाने पर भी लाभदायक है।

उपयुक्त किस्में –

प्याज लाल – पूसा रेड, नासिक रेड, पंजाब रेड राउण्ड, आर.ओ. –252, आर.ओ.–59, भीमाराज, हिसार प्याज–3।

प्याज सफेद – उदयपुर–102, पूसा व्हाइट फ्लेट , पूसा व्हाइट राउण्ड, अकोला सफेद

प्याज पीली – अर्ली ग्रेनो

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार – आमतौर पर सभी किस्म की भूमि में प्याज की खेती की जा सकती है। भूमि लवणीय एवं क्षारीय नही होनी चाहिये, गंधक की कमी हो तो 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर भूमि में मिलाना चाहिये।

बुवाई – रबी की फसल के लिये बीज मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक बुवाई करें तथा एक हैक्टर फसल लगाने के लिए 10 किलो बीज पर्याप्त होता है। पौधे एवं कन्द तैयार करने के लिए बीज को 3 गुणा 1 मीटर कतार की क्यारियों में बोयें। बोने के बाद बीज को बारीक खाद एवं भुरभुरी मिट्टी से ढक देवें व झारे सें पानी देवें।

उर्वरक – बुवाई के समय प्रति हैक्टेयर की दर से 50 किलो नत्रजन व 50 किलो फास्फोरस व 100 किलो पोटाश दें। प्रथम सिंचाई के

समय 50 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से नत्रजन उर्वरक छिटक कर दें।

पौध की रोपाई – पौध लगभग 7–8 सप्ताह में रोपाई योग्य हो जाती है। अतः इसकी रोपाई कतार से कतार 15 सेमी. पौधे से पौधे 10 सेमी. दूरी पर 15 दिसम्बर से 15 जनवरी तक करें।

निराई गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण – खरपतवार नियंत्रण हेतु खड़ी फसल में खुरपी से निराई गुड़ाई करें।

सिंचाई – बुवाई या रोपाई के साथ एवं 3–4 दिन बाद हल्की सिंचाई करें। तत्पश्चात 10–12 दिन में सिंचाई फसल की आवश्यकतानुसार करते रहें।

प्रमुख कीट

पर्णजीवी (थ्रिप्स) – कीट छोटे आकार के होते हैं तथा इनका आक्रमण तापमान की वृद्धि के साथ–साथ तीव्रता से बढ़ता है तथा मार्च में अधिक स्पष्ट दिखाई देने लगता है। इसके नियंत्रण हेतु फसल पर कीट प्रकोप होते ही मैलाथियान 50 ई सी या मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू एस सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 2 से 3 सप्ताह बाद इनमें से कोई एक दवा का छिड़काव पुनः दोहरावें।

प्रमुख व्याधियां

तुलासिता एवं अंगमारी – प्याज की फसल इस रोग से प्रभावित होती है। तुलासिता से रोगी पौधों की पत्तियों पर सफेद सी फफूंद लग जाती है। जबकि अंगमारी रोग में सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। यह धब्बे बाद में बीच से बैंगनी रंग के हो जाते हैं। नियंत्रण हेतु फसल पर

जाईनेब या मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

गुलाबी जड़ सड़न – इस रोग से प्रभावित जड़े गुलाबी होकर गलने लगती है। नियंत्रण हेतु बीज को 1.0 ग्राम कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यू पी से उपचारित कर बुवाई करें। पौध रोपण के समय पौधों को 1.0 ग्राम कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यू पी प्रति लीटर पानी के घोल में डुबोकर बुवाई करें।

खुदाई, उपज एवं भण्डारण – प्याज की फसल बुवाई के 3–4 माह बाद पककर तैयार हो जाती है। जब प्याज की पत्तियां पीली पड़ने लगे उस समय खुदाई की जानी चाहिये। इससे लगभग 200–350 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। खुदाई करने के बाद कंदों की सूखी पत्तियां काटकर अलग कर देनी चाहियें। बाद में इन्हें टोकरियों में भरकर सूखी एवं ठण्डी जगह पर भण्डारित करना चाहिये।

अमूल्य नीर योजना का लाभ उठाएं,
पानी बचायें, कृषि उत्पादन बढ़ायें।।